दोस्तों,

आज मुझे बडा मज़ा आया। नान्गलामाची में दो नये कम्प्यूटर को ईन्स्टाल करने के लिये मैं और आशीश नेगी वहाँ गये थे। ना.मा. के सारे लोग बहुत ही अच्छे लगे - बडे तेज़ और होशियार लगते हैं। वहाँपर आशीश ने नये कम्प्यूटर के प्लग वगेरह जोडने के वक़त नये कम्प्यूटर को खोल कर एक मोटे तौर पे कम्प्यूटर के बारे में बताया।

एक कम्प्यूटर सराय से आया है और दूसरा बिल्कुल नया है। नया कम्प्यूटर बहुत तेज़ है, तो इस वजह से उस्में जैण्टू २० मिणट में इनस्टाल हो गई ।

जब कम्प्यूटर इनस्टाल हो रहा था तो ना. मा. के साथी सा. मो. के लैप्टौप को देख रहे थे और उसमें रेसिंग (आर्मागैट्रौण)और ब्रिक्स (एलट्रिस) का मज़ा ले रहे थे। जोसफ़ को तो मार्शल आर्टस की ही गेम चाहिए और शायद यह भी मिल जाऐ।

लैब के साथियों ने कम्प्यूटर का नाम अनोखा रखा और वह बहुत खुश थे जब मशीन को औण कर दिया गया और स्क्रीण पे Welcome to anokha दिखा। शुरू से ही लोग बोल रहे थे कि वह केडीई की हिन्दी अनुवादित रुप में काम करना पसंद करना सीखेंगे - लैब

के दूसे साथी होशियार रहें - आप भी हिन्दी kde का कुछ तो उपयोग करो!

जानू भाई ने तो बडी ही जल्द बोलनाग्री का आईडिया सीख लिया और वह उस से बहुत खुश हैं । सादा पाठ सम्पादक (kedit) और क और a के आईकौण्स के साथ कुछ लोगों (छाया दीदी भी!) ने बोलनाग्री को टेस्ट किया।

कल मैं अप्ने टूटे हुए चश्मे को ठीक करवाके नान्ग्लामाची पहुँचूँगा और दो दिन के लिये मेरा वहाँ वर्कशौप रहेगा कम्प्यूटर के मूल हिस्सों के बारे में बताना और थोडा बहुत फाईल, फोल्डर के बारे में बात करने का होगा। मैं सोचता हूँ कि इस बारे में मैं आप्की राय ले लूँ (सूरज के अलावा) तो बेह्तर होगा - पहला हफ्ता का प्रोग्राम क्या होना चाहिए ? जितना हो सके, मैं उनको गिम्प के बारे में बताऊँगा और बुधवार को सूरज आ के मेरे गल्तियों को सुधार सक्ता है। ओपेन औफिस राईटर के बारे में भी मैं कुछ कोशिश करूँगा और आप लोग जब लैब आऐंगे तो उनके सवालों को क्लीयर करने कि कोषिश करना। गिम्प, ओपेन औफिस राईटर और फाईल / फोल्डर को छोडके, मेरी राय में कम से कम एक या दो महीनों के लिये वह गेम्स का ही मज़ा लें तो ठीक रहेगा ।

जब मैं कम्प्यूघर आया था तो जेपी और डीपी के लोग

तो बहुत महीनों से कम्प्यूटर इस्तेमाल कर रहे थे। यह मेरा पहला मौक़ा होगा शुरुआत से एक लैब और तकनीकी चीज़ों के साथ कोर्मे देखना :) आषा होगी कि आप लोग भी इस पे कुछ सोचेंगे और मज़ा लेंगे नान्ग्लामाची के साथ!

सलाम!,
अनिरुद्ध शंकर उर्फ करीम